कबीर काव्य की प्रासंगिकता

''कबीर विश्व संत हैं''1 क्योंकि उनके विचार न केवल भारतीय जनमानस को प्रभावित करते हैं बल्कि विश्व स्तर पर भी जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। इसका मुख्य कारण उनके काव्य में मानवतावाद, अहिंसावाद, समरस्तावाद, लोक कल्याण जैसे विचारों का होना है। संत कबीर दास का आविर्भाव एक ऐसे समय में हुआ था जब भारतीय समाज में अराजकता, वैमनस्य बाह्यआडंबर तथा भेद भाव का माहौल था। संत कबीर दास का आगमन एक क्रांतिकारी घटना थी। ''काल की कठोर आवश्यकताएँ महात्माओं को जन्म देती हैं। कबीर का जन्म भी समय की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ था।''2 यह वह समय था जब ''नाममात्र के अपराध के लिए भी किसी की खाल खिंचवाकर उसमें भूसा भरवा देना एक साधारण बात थी।''3 ऐसी विषम परिस्थितियों में सिकंदर लोधी के समय 14 वीं शताब्दी में काशी में संत कबीरदास का अवतरण होता है। यह अवतरण केवल पहली बार नहीं हुआ है बल्कि चारों युगों में विभिन्न रूपों में होता रहा है–

मसी कागद छ्वों नहीं कलम गही नहि हाथ।

चारि जुग के महातम कबीर मुखहिं जनाई बात ॥4

संत कबीरदास चारो युगों में विभिन्न नामों से जाने गए। आपने दिग्भ्रमित समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए एक उपदेशक की भूमिका निभाई है। इसके लिए आपने कागज, कलम, स्याही जैसे उपकरणों का उपयोग नहीं किया है। आपने मौखिक रूप में अपने विचारों का प्रतिपादन किया है। संत कबीर दास ने दिशाहीन जनमानस का पथ आलोकित कर नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाई है। ''भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीर दास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि हैं जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घकाल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया और सच्चे अर्थों में जन जीवन का नायकत्व किया।''5

संत कबीर दास जी ने अपने क्रांतिकारी विचारों से वर्ग, जाति, भेद–भाव रहित ऐसे समाज को स्थापित करने की वकालत की है जिसमें आपसी भाईचारा, सोहार्द्र, पारस्परिक प्रेम, समता तथा एकता की भावना हो। आपके लगभग 61 से 71 तक ग्रंथ बताये जाते हैं। आपके काव्य में खंडन–मंडन की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। आपने समाज विरोधी कुकृत्यों का खंडन तो समाज सापेक्ष कृत्यों का मंडन किया है।

संत कबीर दास जी ने गुरु माहात्म्य पर विशेष बल दिया। आपका विचार है कि सद्गुरु ही ईश्वर से साक्षात्कार करा सकते हैं–

जाका गुरु है आंधरा, चेला काह कराया।

अंधे अंधा ठेलिया, दोऊ कूप पराय ॥6

संत कबीर दास ''गुरु गोविंद तो एक है'' कहकर उसकी महिमा अनेकशः गायी है–

सतगुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार ।

लोचन अनंत उघाड़िया,अनंत दिखावणहार ॥8

संत कबीर दास जी ने यद्यपि आध्यात्मिक ज्ञान के लिए गुरु की महिमा गायी है तथापि भौतिक ज्ञान के लिए भी गुरु की कम आवश्यकता नहीं होती है। वर्तमान समय में जितने आविष्कार, खोजे तथा तकनीकी उपलब्धियाँ प्राप्त की जा रही हैं सब गुरु के मार्गदर्शन से ही संभव हो सका है।

संत कबीर दास संत भी हैं और भक्त भी। आप जन मानस में भक्ति के वास्तविक स्वरूप को समझाने का प्रयास करते हैं। उनके समय में भक्ति का स्वरूप विकृत हो चुका था इस लिए उन्हें कहना पड़ा–

कबीरन भक्ति बिगारिया, कंकड पत्थर धोय ।

अंतर में विख राखि के अमरित डारिन खोय ॥9

संत कबीर दास बाहमाडंवरों का खुलकर विरोध करते हैं। आप आत्मिक शुद्धि पर अधिक बल देते है, ढोंग के परम विरोधी हैं। आपका मानना है जब तक आंतरिक शुद्धता नहीं होगी तब तक भगवद् सानिध्य संभव नहीं है। वह किसी स्थान विशेष में रहने वाला नहीं है बल्कि वह घट घट वासी अविनाशी सर्वशक्तिमान, निराकार है। यही ब्रह्म अपनी इच्छा से जीव के रूप में अवतरित होता है। शेखतकी को उपदेश देते हुए कहते हैं–

नाना नाच नचाये के, नाचे नट के भेस ।

घट–घट है अबिनासी,सुनह तकी तुम सेख ॥10

अद्वैतवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए आप कहते हैं–

बूंद जो परा समुद्र में सो जानत सब कोय।

समुद्र समाना बूंद में, सो जाने विरला कोय।।11

संत कबीर दास जीवन को क्षणभंगुर और संसार को नश्वर मानते हैं–

ई संसार असार को धंधा अंतकाल कोई नाहीं हो।

उपजत बिनसत बार न लागे ज्यों बादल की छांही हो।12

संत कबीर दास हिंसा एवं जीव हत्या का जमकर विरोध करते हैं। उनका विचार है कि ऐसा करने वाला व्यक्ति पाप का भागी बनता है चाहे वह कितने ही धर्म ग्रंथों को क्यों न सुन ले लेकिन उस कुकृत्य के परिणाम से बच नहीं सकता। उसे उस कर्म का योग भोगना ही होगा–

जिउ मत मारो बापुरा सबका एकै पान ।

हत्या कबहुँ न छुटिहै,कोटिन सुनो पुरान ॥13

व्यावहारिक जीवन में वाणी का विशेष महत्त्व होता है। मधुर वाणी से आप लोगों को अपना मित्र बना सकते हैं तो कटु वाणी से शत्रु । शस्त्र का घाव तो भर जाता है पर वाणी का नहीं भरता । इस लिए सोच समझ कर बोलना चाहिए –

बोली तो अनमोल है जो कोई बोले जान।

हिये तराजू तौलि के तब मुख बाहर आन ॥ 14

संत कबीर दास जी का विचार है कि हमें सदैव सत्य के मार्ग का अनुशरण करना चाहिए। सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति की ईश्वर स्वयं मदद करता है –

सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।

जाके हिदया सांच है ताके हिदया आप ॥15

इस प्रकार हम देखते हैं कि संत कबीर दास जी के काव्य की उपयोगिता जितनी उनके समय में थी एक लंबे अंतराल बीत जाने के बाद अर्थात् वर्तमान में भी उसकी प्रासंगिकता यथावत् बनी हुई है। उनके काव्य की वाणियों को अपने जीवन में उतारकर हम एक अच्छे नागरिक बन कर एक आदर्श समाज की स्थापना कर सकते हैं जो शोषण चक्र से मुक्त एवं लोक कल्याणकारी हो। इस लिए कहा जा सकता है कि संत कबीर दास के काव्य की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 पूरा कबीर, पृष्ठ–7, डॉ बलदेव बंशी, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली।

2. कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ–15, सं. डॉ. श्यामसुंदर दास, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली।

3. वही

4 बीजक, पृष्ठ–423, सं. गंगाशरण शास्त्री (कबीर चौरा पाठ)

5. हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–126, डॉ. त्रिलोकीनाथ दीक्षित, सं. डॉ नगेंद्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

6. बीजक, पृष्ठ– 412, सं. गंगाशरण शास्त्री (कबीर चौरा पाठ)

7 कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ–61, सं. डॉ. श्यामसुंदर दास, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली

8. वही, पृष्ठ–59

9. बीजक, पृष्ठ–445, सं. गंगाशरण शास्त्री (कबीर चौरा पाठ)

10. वही, पृष्ठ–87

11. वही, पृष्ठ–384

12 वही, पृष्ठ–308

13 वही, पृष्ठ–431

14 वही, पृष्ठ–453

15 वही, पृष्ठ–472